संसद भवन में गुरुदेव श्री रवींद्रनाथ टैगोर के पुष्पांजलि कार्यक्रम में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

संसद भवन के केन्द्रीय कक्ष में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर को नमन करता हूँ।

उनकी जयंती पर आज केन्द्रीय कक्ष में उन्हें पुष्पांजलि देने आए आप सभी युवाओं, विद्यार्थियों का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ।

देशभर से युवा जब संसद भवन में हमारे महापुरुषों के जीवन दर्शन और आदर्श विचारों पर विमर्श करते हैं, तो इस चर्चा से देश के नौजवानों को नई प्रेरणा मिलती है।

गुरुदेव रवींद्र नाथ टैगोर को कविगुरु और विश्व गुरु भी कहा जाता है। गुरुदेव श्री रवींद्रनाथ टैगोर का जीवन अत्यंत विशाल, विविध और व्यापक था। हम उनके जीवन अनुभवों के बारे में पढ़ते हैं कि बहुत विस्तृत जीवन अनुभव था उनका।

आज के हिसाब से कहूँ तो वो एक मल्टी टास्किंग और डाइनेमिक व्यक्तित्व थे। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर का जीवन इस बात का प्रमाण है कि एक व्यक्ति अपने जीवन में क्या क्या कर सकता है।

वो एक महान कवि, गीतकार, संगीतकार, साहित्यकार और चित्रकार थे। वो एक महान राजनीतिक चिंतक, दार्शनिक और विश्व विचारक भी थे। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर भारत की श्रेष्ठ ऋषि-मनीषी परंपरा के व्यक्तित्व थे।

उन्होंने साहित्य की महान कृति "गीतांजलि" की रचना की, जिसके लिए उन्हें 1913 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। गुरुदेव रवींद्र नाथ टैगोर पहले एशियाई थे, जिन्हें इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

अपने समय में उन्होंने 30 से अधिक देशों (34 देशों) की यात्रा की थी। ये आज से करीब 100 - 150 साल पहले की बात है। उस समय परिस्थितियाँ आज जितनी आसान नहीं हुआ करती थी।

गुरुदेव ने यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन से लॉ की पढ़ाई की। आज उसी यूनिवर्सिटी में साहित्य के अध्ययन में टैगोर पर लेक्चर सीरीज पढ़ाई जाती है।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर का जीवन हमें अपने देश और सम्पूर्ण मानवता के प्रति समर्पण भाव सिखाता है। जब वो एक कवि के रूप में गीत-कविताएं लिखते थे, तब देश-काल की परिस्थितियों के अनुसार राष्ट्रवाद, देशप्रेम और आजादी के गीत लिखते थे। जब वो समाज सुधार की बात करते थे तो देशवासियों में भाईचारे, एकता की बात करते थे। उन्होंने सदैव इस बात पर जोर दिया कि विविधता में एकता ही भारत के राष्ट्रीय एकीकरण का एकमात्र संभव तरीका है।

गुरुदेव जब शिक्षक के रूप में शिक्षा का महत्व बताते थे, तब वो भारतीय संस्कृति और शिक्षा प्रणाली का महत्व बताते थे। वे कहते थे, कि शिक्षा किताबी ज्ञान तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए। शिक्षा को व्यावहारिक बनाना आवश्यक है।

शिक्षा का उद्देश्य समाज की प्रगति के लिए समाज में जागरूकता बढ़ाना होना चाहिए अन्यथा ऐसी शिक्षा निरर्थक है। इस सदी में भी यह बात सुसंगत है।

उन्होंने वर्ष 1921 में शांति निकेतन में विश्व-भारती विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। एक ऐसा शिक्षण संस्थान, जहां जहां स्वतंत्र वातावरण में, प्रकृति के मध्य, जीवन के अनुभवों के साथ साथ शिक्षण हो। ऐसा परिवेश जहां मस्तिष्क के साथ हृदय का भी विकास हो। शिक्षा को लेकर उनका मानना था कि शिक्षा ही मनुष्य को सशक्त बना सकती है और शिक्षा से ही समाज में सुधार किया जा सकता है।

रवींद्रनाथ टैगोर ने पश्चिमी ज्ञान – विज्ञान का अध्ययन भी किया और भारतीय ग्रंथ, महाकाव्य, उपनिषद भी पढ़ें। उन्होंने भारत के युवाओं को आधुनिक बनने का संदेश दिया, लेकिन भारतीय संस्कृति - भारतीय संस्कारों को अपनाकर।

वर्ष 1905 में जब बंगाल विभाजन किया गया तब रवींद्र नाथ टैगोर ने "अमार सोनार बांगला" गीत लिखा था। आज यह गीत बांग्लादेश का राष्ट्रीय गान है। उनका एक प्रसिद्ध गीत है, "एकला चलो रे" यह गीत हमें सीख देता है कि अन्याय के खिलाफ लड़ाई में अगर आपके साथ कोई नहीं खड़ा है, आप अकेले चल रहे हो तो भी चलते रहो, अपने पथ से विचलित ना हो।

वसुधैव कुटुंबकम हमारी मूल संस्कृति है, और आज भी भारत इसी भावना के साथ आगे बढ़ रहा है। आज जब भारत जी-20 समूह के देशों का नेतृत्व कर रहा है, हमारी थीम है, "एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य।" गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने सदा यही बात कही।

उन्होंने भारतीय संस्कृति के अनुसार सम्पूर्ण विश्व को अपना परिवार माना। उन्होंने विश्व मानवतावाद की अवधारणा दी।

गुरुदेव टैगोर का दृष्टिकोण और विचारधारा बहुत आधुनिक थी। वह कहा करते थे कि "आज का युवा ही कल का भविष्य है"। उन्होंने अपना अधिकांश जीवन देश और पूरे विश्व के कल्याण हेतु अपने समय की युवा पीढ़ी को शिक्षित और अनुशासित बनाने और उन्हें प्रेरणा प्रदान करने हेतु समर्पित कर दिया।

रवीन्द्रनाथ टैगोर का दर्शन हमें निरंतर कर्म करने और सकारात्मक सोच के लिए प्रेरित करता है। वो कहते थे, "यदि मुझे एक द्वार बंद मिलता है तो मैं दूसरे से निकलने का प्रयास करता हूं, या फिर मैं अपने लिए द्वार खुद बनाता हूं। कुछ न कुछ अच्छा अवश्य होगा, चाहे वर्तमान में कितना भी अंधियारा क्यों न हो।"

समाज और मानवता की सेवा के लिए उनका समर्पण ऐसा था कि वे कहा करते थे; "निद्रा में मुझे स्वप्न आया कि जीवन आनंद है। मैं जागा और मैंने देखा कि जीवन सेवा है। मैंने उस पर अमल किया और पाया कि सेवा ही आनंद था।"

आज यहाँ देश भर से आए विद्यार्थियों (युवाओं) से मैं यही कहना चाहूँगा कि आप यहाँ हमारे महान राष्ट्र नायकों को नमन करने आए हैं, उनके जीवन दर्शन से प्रेरणा लेने आए हैं। यहाँ से प्रेरणा लेकर आप हमारे महापुरुषों के सपनों का भारत बनाने और समाज के कल्याण में सार्थक योगदान देने के लिए आगे बढ़ेंगे।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर का जीवन उतना ही विविध और विस्मयकारी है जितनी समृद्ध उनकी सृजनशीलता। वे एक असाधारण व्यक्तित्व थे। मुझे विश्वास है कि हमारी भावी पीढ़ियां हमारे इन महान नेताओं के पदचिह्नों पर चलकर अपने देश और समाज के लिए श्रेष्ठ भूमिका निभाएंगी।

प्राइड द्वारा आयोजित ऐसे कार्यक्रम युवाओं को हमारे महान राष्ट्र नायकों से जोड़ रहे हैं। इससे युवाओं में अपने अतीत के लिए गौरव की भावना में वृद्धि होती है। आज जब भारत 'आजादी का अमृत महोत्सव' मना रहा है, तब अपने स्वर्णिम अतीत पर हम सबको गर्व होना भी चाहिए। हमें अपने अतीत से प्रेरणा लेकर, अपने महापुरुषों के जीवन से सीखकर नवभारत के निर्माण के लिए आगे बढ़ना चाहिए।

इसी संदेश के साथ मैं सभी नौजवानों को बहुत बहुत शुभकामनाएं देता हूँ।